06.02.2021

भगवान की शरण में कौन आते हैं?

गीता में इस प्रश्न का सटीक जवाब आया है- "चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनो..." (7/16) अर्थात् चार प्रकार के सुकर्मी मेरे पीछे भागते हैं। जिनकी श्रेष्ठ भक्ति-भावना का गायन भागवत पुराण में नंबरवार शरणागत और भगवान के पीछे भागने वाली पत्नियों के रूप में है, जिन्हें पति-पत्नी का गुप्त संबंध जोड़ने वाली गोपियाँ कहा गया है।

ब्रह्माकुमारी संस्था की पुरानी हिस्ट्री और उनके द्वारा छपाई गई मुरलियों में भी यह बात आई है कि "अमेरिका के एक अखबार में पड़ा था कि कलकत्ते का एक जवाहरी कहता है कि मुझे 300-400 रानियाँ मिल गई हैं, अभी 16000 चाहिए।" अभी भी ब्रह्माकुमारियों का भी और आध्यात्मिक विद्यालय का भी यही कहना है कि सृष्टि की कुल आयु 5000 वर्ष है और आज से ठीक 5000 वर्ष पूर्व कलियुग के अंत भाग में महाभारी महाभारत युद्ध हुआ था। जिससे ठीक पहले, पूर्व कल्प में भी 16000 गोपियों की प्रैक्टिकल भागवत हुई थी। त्रिमूर्ति शिव की ब्रह्मा द्वारा सुनाई गई नितांत सच्ची वेदवाणी/मुरलियों में यह भी कहा गया है कि "गीता-ज्ञान का कनेक्शन भागवत से है और फिर भागवत का कनेक्शन महाभारत युद्ध से है" अर्थात् ईश्वरीय गीता-ज्ञान सुनकर भगवान के पीछे भागने वाली और शरण में आने वाली पवित्र बुद्धि गोपियों द्वारा प्रैक्टिकल भागवत होती है, जिसकी यादगार आज भी भारत के गाँव-गाँव, शहर-शहर में बड़ा भारी मजमा लगाने के साथ-साथ बड़े चाव से भागवत कथा सुनने के लिए लोगों की भारी भीड़ इकट्ठी होती है। जबकि इससे पहले उसी भगवान द्वारा अन्यान्य धर्मपिताओं के मुख द्वारा सुनाए गए धर्मग्रन्थों की तरह गीता-ज्ञान के प्रति इतनी चाहत और भीड़ भी इकट्ठी नहीं होती। जबकि सभी धर्मपिताओं को चारों ओर धर्म स्थापना के धक्के खाने ही पड़ते हैं। इसी बीच जिन लौकिक परिवारों या सरकार और समाज से भारी मान्यता प्राप्त ब्रह्माकुमारी जैसी संस्थाओं से भयभीत और परेशान होकर भगवान के सामने भी गीता-वर्णित "चतुर्विधा... आर्तो, जिज्ञासुः, अर्थार्थी ज्ञानी च" जैसी ज़्यादा-से-ज़्यादा तादाद में पवित्र बुद्धि वाली आर्तनाद करने वाली कन्याओं और कुछ माताओं रूपी गोपियाँ अचानक चकमा देकर भी भगवान की शरण में भाग जाती हैं, उन कन्याओं-माताओं, विधवाओं, वृद्धाओं, परित्यक्तताओं आदि को बाँधकर रखने वाले भावविहीन और दुष्टहृदय के परिवार जन तथा ब्रह्माकुमारियों में पुराने-पुराने रहे पड़े जरासिधियों में अपने समाज की सांसारिक लोक-लाज बचाने के लिए देह-अहंकार में आकर भयंकर क्रोध जाग्रत हो जाता है, जिसके कारण समूचे समाज और सरकारी तबक्कों में अपने तन-मन-धन और जनबल की सारी ताकत लगाकर मीडिया वा सरकारी अधिकारियों आदि के द्वारा गीता के अनुसार गुप्त भेषधारी साधारण मनुष्य तन में आए हुए अल्लाह अव्वलदीन सनातन धर्मस्थापक के बारे में क्राइस्ट आदि की तरह ही सर्वथा व्यक्तिगत भ्रामक अफवाहें फैलाकर क्रमशः धीरे-धीरे करते हुए आखरीन भयंकर धर्मयुद्ध आरम्भ कर देते हैं। खासकर भारतीय भागवत, महाभारत और रामायण आदि शास्त्रों में इसी स्थिति की पूजनीय नारियों का वर्णन बड़े-बड़े युद्धों का कारण रूप में किया गया है। महाभारत में नगन किए जाने वाली नंबरवार द्रौपदी जैसी सुंदरियाँ, रामायण में रुलाने वाले रावण संप्रदाय द्वारा चुराई जाने वाली सीता जैसी सती-साध्वी नारियाँ और देवासुर संग्राम में प्रथम पूजनीय महागौरी लक्ष्मी जैसी अनेकानेक गृहिणियाँ ही इन युद्धों का मूल कारण पुरुष भेष वाले शास्त्रकारों द्वारा बताई गई हैं, जैसे कि खास मिडा बाल ग्राम अलीपुर, उत्तरी दिल्ली में मीडिया द्वारा व्यक्तिगत अफवाहें फैलाकर, 48 बालिग कन्याओं को नाबालिग घोषित करते हुए बंधन से छुड़ाने के नाम पर कई महीनों के लिए जैसे किडनैप्ड की तरह जेल में डालने का दंड दे दिया हो। ऐसे ही पुरुष शास्त्रकारों ने भी लक्ष्मी, सीता, द्रौपदी जैसी युवतियों को बड़ी-बड़ी लड़ाइयों का कारण बताकर और ही दण्डित कर दिया है। सारे कल्प में एक ही बार "गॉड इज़ वन" कहे जाने वाले, एक मात्र पुरुष भेषधारी, पापी कलियुग अंत के

कलंकीधर भगवान को तो दण्डित कर नहीं सके, तो कम-से-कम 2500 वर्ष से चले आ रहे द्वैतवादी द्वापर से दैत्य रूप पुरुषों द्वारा अबला बनाई गई निरीह नारियों को तो दण्डित कर ही लिया जाए!

इन तथाकथित ब्रह्माकुमारों का यह भी कहना है कि 5000 वर्ष पूर्व की तरह अभी फिर से महाभारत युद्ध सामने खड़ा है। पुराणों में इसी युद्ध का सबसे बड़ा एक मूल कारण यह भी है कि खास पापी कलियुग में अकिंचन बनाई गई नारियाँ भगवान कलंकीधर अवतार के पीछे नम्बरवार एक-एक करके हज़ारों की तादाद में भागने वाली गोपियाँ अभी ही कल्पपूर्व में सिर्फ़ एक बार की तरह फिर से दिखाई दे रही हैं।

"बिन फेरे हम तेरे" की इसी समय से प्रचलित कहावत के अनुसार यही अजूबा ब्रह्माकुमारियों की हिस्ट्री में ओममंडली से सम्बंधित 400 भागने वाली गोपियों से बढ़कर आज प्रैक्टिकल में 1000 हो सकती है तो आज के खास भारतीय समाज की त्रस्त और दुखियारी नारी परिवेष में जल्दी ही 16000 क्यों नहीं हो सकती?

"यथा राजा तथा प्रजा" के अटल ऐतिहासिक नियमानुसार आज देश-विदेश की भ्रष्टाचारी सरकारों के नुमाइन्दों के काले कारनामे समूचे देश-विदेशों में शोहरत फैला रहे हैं तो क्या भारतीय भ्रष्ट समाज के सरगने पीछे रह जाएँगे? इन सरगनों रूपी दुर्योधन-दुःशासनों, जरासिंधियों आदि की भारी संख्या पुरुष जाति में है। नारियों में कोई इक्का-दुक्का रावण के दरबार में लड़ाई लगाने वाली निर्लज्ज सूर्पनखाओं और कामवासना का विष पीने वाली पूतनाओं की संख्या तो बहुत थोड़ी ही है। ब्रह्माकुमारियों की छपाई मुरलियों में तो यही लिखा है कि सब पुरुष बलात्कार का बलपूर्वक दुष्ट युद्ध करने वाले दुर्योधन हैं और अबलाओं पर दुष्ट शासन करने वाले दुःशासन हैं। • दुष्ट युद्धकर्ता विकारी को दुर्योधन कहा जाता है। (मु.ता. 19.4.88 पृ.3 आदि)

• पहले-पहले दुर्योधन ही स्त्री को नगन करते हैं। ऐसे नहीं स्त्री पुरुष को नगन करती है। स्त्री में शर्म रहता है, पुरुष निर्लज्ज होते हैं। इसलिए दिखाया है- द्रौपदी की चीर उतारी थी। हर एक मनुष्य मात्र पुरुष दुर्योधन, स्त्री द्रौपदी। (मु.ता.13.4.73 पृ.5 अंत)

गीता के अनुसार भगवान की शरण लेने हेतु भागने वाले "चतुर्विधा भजन्ते माम्.....आर्तो" की ज़्यादातर संख्या इन्हीं आर्तनाद करने वाली कन्या-माताओं की है, जिन्हें स्वतंत्र भारतीय समाज में तिरष्कृत और परित्यक्त करके कभी भी भगा दी जाने वाली नारी जाति को या तो उनकी इच्छा के विरूद्ध शादी करने का दबाव दिया जाता है या तो भ्रष्ट इन्द्रियों का बलपूर्वक दुराचरण करने वाले वास्तविक भ्रष्टाचारियों के बीच रहकर नौकरी-धंधा आदि करने का दबाव दिया जाता है। इन्हीं नारियों का गीता में - "चतुर्विधा" में से पहला नंबर 'आर्तो' अर्थात् दुखी, परेशान कहा गया है; क्योंकि भारतीय परंपरा अनुसार जन्म-जन्मान्तर से 'एकलिग स्वामी की अनुगामिनी' पार्वती की फॉलोअर जैसी, एक खूंटे से खुशी-खुशी सारा जीवन बँधकर रहने वाली, इस एकमात्र भारत देश की सरल स्वभाव वाली, सीधी-सादी ह्यूमन गइयों की पालना साक्षात् शिव-शंकर भगवान ने ही की थी, ऐसे नहीं कि बच्चे के रूप में यादगार मंदिरों में पूजे जाने वाले, छोटे-से बच्चा बुद्धि कृष्ण कन्हैया ने की थी। छोटा बच्चा कैसे कन्याओं की पालना करेगा? यह तो ठीक है कि गोपाल-कन्हैया गाया हुआ है, बैल पाल नहीं गाया हुआ है। जिस भगवान की यादगार में आज भी "शिवोऽहम्" कहने वाले साधु-संन्यासी एक तरफ तो दुर्गा-पूजन में कन्याओं को भोजन आदि खिलाकर पूजा करते हैं। बाकी तो दूसरी तरफ इस कलियुगी पापी दुनिया को स्वयं ही "नारी नरक का द्वार" कहकर परित्याग करते हुए व्यभिचारी वेश्याओं का रौरव नरक बनाकर जंगल में भाग जाते हैं। अब इस प्रकार परित्याग की हुई नारियाँ मजबूरी में कैसे अपना जीवन-निर्वाह करतीं? जिनको सभी ठुकराते हैं उनको एक भगवान का ही सहारा मिलता है और वही भगवान की शरण में आती हैं।